
विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्व-निर्देशित अधिगम की प्रासंगिकता

अमित सिंह चंदेल¹ & लाजवन्ती²

¹शोधार्थी, शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
Email- ac249785@gmail.com

²प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19485329>

Received on: 05/02/2026

Accepted on: 26/03/2026

Published on: 09/04/2026

सार:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का उद्देश्य शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और आजीवन सीखने को बढ़ावा देकर भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना है। इन लक्ष्यों का समर्थन करने वाले सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों में से एक स्व-निर्देशित शिक्षण (एसडीएल) है। स्व-निर्देशित अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसमें छात्र अपनी सीखने की जरूरतों की पहचान करने, सीखने के लक्ष्य निर्धारित करने, उचित सीखने की रणनीतियों का चयन करने और अपने सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करने में पहल करते हैं। यह शोध पत्र एनईपी 2020 के ढांचे के भीतर स्व-निर्देशित अधिगम की प्रासंगिकता और छात्रों के शैक्षणिक विकास के लिए इसके महत्व की जांच करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि स्व-निर्देशित अधिगम स्वतंत्र सोच, समस्या-समाधान कौशल और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। यह छात्रों को आत्मविश्वास, जिम्मेदारी और आजीवन सीखने की क्षमता विकसित करने में भी मदद करता है। ये गुण एनईपी 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप हैं, जो लचीली शिक्षा, बहु-विषयक शिक्षा और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर जोर देते हैं।

मूल शब्द: स्व-निर्देशित शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, छात्र स्वायत्तता, आजीवन शिक्षा, शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा।

परिचय:

इक्कीसवीं सदी में शिक्षा स्वतंत्र, महत्वपूर्ण और आजीवन शिक्षार्थियों के विकास पर जोर देती है। पारंपरिक शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण धीरे-धीरे शिक्षार्थी-केंद्रित तरीकों से प्रतिस्थापित किए जा रहे हैं जो छात्रों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसा ही एक दृष्टिकोण स्व-निर्देशित अधिगम (एसडीएल)

है, जो एक ऐसी प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसमें शिक्षार्थी अपनी सीखने की जरूरतों की पहचान करने, लक्ष्य निर्धारित करने, संसाधन खोजने, सीखने की रणनीतियों को चुनने और अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने में पहल करते हैं। स्व-निर्देशित अधिगम छात्रों को महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान, निर्णय लेने और आत्म-प्रेरणा जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद करता है। भारत सरकार द्वारा शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाना है। नीति रटने के बजाय लचीलेपन, बहु-विषयक शिक्षा, रचनात्मकता और अनुभवात्मक सीखने पर जोर देती है। एनईपी 2020 सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए नवीन शिक्षण विधियों, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और छात्र-केंद्रित शिक्षाशास्त्र के उपयोग को प्रोत्साहित करती है।

इस संदर्भ में, स्व-निर्देशित अधिगम एनईपी 2020 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षार्थी स्वायत्तता और सक्रिय जुड़ाव को बढ़ावा देकर, एसडीएल छात्रों को अपनी शिक्षा की जिम्मेदारी लेने और आजीवन शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनाता है। इसलिए, छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता में सुधार के लिए एनईपी 2020 के ढांचे के भीतर स्व-निर्देशित शिक्षा की प्रासंगिकता को समझना आवश्यक है।

स्व-निर्देशित अधिगम (एसडीएल) एक सीखने की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी सीखने की जरूरतों की पहचान करके, लक्ष्य निर्धारित करके, उचित संसाधन खोजकर, उपयुक्त अधिगम रणनीतियों का चयन करके और अपने सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करके अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लेते हैं।

मैल्कम एस. नोल्स (1975) के अनुसार

"एक प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति दूसरों की मदद के साथ या उसके बिना, अपनी सीखने की जरूरतों का निदान करने, सीखने के लक्ष्यों को तैयार करने, सीखने के लिए मानव और भौतिक संसाधनों की पहचान करने, उचित सीखने की रणनीतियों को चुनने और लागू करने और सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करने में पहल करते हैं।"

डेविड आर गैरीसन (1997) ने स्व-निर्देशित सीखने को आत्म-प्रबंधन, आत्म-निगरानी और प्रेरणा के संयोजन के रूप में वर्णित किया, जहां शिक्षार्थी सक्रिय रूप से अपनी सीखने की प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं।

पॉल कैंडी (1991) ने समझाया कि स्व-निर्देशित शिक्षा स्वतंत्र और आजीवन शिक्षार्थियों को विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है, क्योंकि यह छात्रों को उनके शैक्षिक विकास की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।

आधुनिक शिक्षा में स्व-निर्देशित अधिगम का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है क्योंकि यह महत्वपूर्ण सोच, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और आजीवन सीखने के कौशल को बढ़ावा देता है, जो इक्कीसवीं सदी में छात्रों के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास, रचनात्मकता, महत्वपूर्ण सोच और आजीवन सीखने को बढ़ावा देकर भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना है। नीति इस बात पर जोर देती है कि शिक्षा को रटने से आगे बढ़ना चाहिए और अनुभवात्मक, पूछताछ-आधारित और शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना चाहिए।

1. प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई)

एनईपी 2020 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है। यह शुरुआती वर्षों में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का समर्थन करने के लिए खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित सीखने की सिफारिश करता है।

2. नई स्कूल संरचना (5+3+3+4)

नीति में पहले की 10+2 प्रणाली की जगह 5+3+3+4 स्कूल संरचना का परिचय दिया गया है। इस संरचना में शामिल हैं:

1. मूलभूत चरण (3-8 वर्ष) - खेल-आधारित शिक्षा
2. प्रारंभिक चरण (8-11 वर्ष) - इंटरैक्टिव और खोज-आधारित शिक्षा
3. मध्य चरण (11-14 वर्ष) - महत्वपूर्ण सोच और विषय की समझ
4. माध्यमिक चरण (14-18 वर्ष) - बहु-विषयक और लचीले सीखने के विकल्प

3. मातृभाषा में सीखना

एनईपी 2020 में सिफारिश की गई है कि बच्चों को कम से कम ग्रेड 5 तक उनकी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाया जाए, जो समझ और सीखने के परिणामों में सुधार करने में मदद करता है।

4. बच्चों का समग्र विकास

नीति संज्ञानात्मक, भावनात्मक, शारीरिक, नैतिक और रचनात्मक क्षमताओं सहित समग्र विकास को बढ़ावा देती है। यह कला, खेल, कोडिंग और व्यावसायिक कौशल को पाठ्यक्रम में भी एकीकृत करता है।

5. कौशल और आलोचनात्मक सोच पर ध्यान

एनईपी 2020 याद रखने के बजाय समस्या-समाधान, रचनात्मकता, संचार कौशल और तार्किक सोच पर जोर देती है। यह दृष्टिकोण बच्चों को भविष्य के करियर और वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।

छात्र स्वायत्तता शिक्षार्थियों की क्षमता को संदर्भित करती है कि वे क्या, कैसे और कब सीखते हैं, इसके बारे में निर्णय लेकर अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लेते हैं। इसमें स्वतंत्रता, आत्म-प्रेरणा और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी शामिल है।

हेनरी होलेक (1981) के अनुसार, छात्र स्वायत्तता को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"अपने स्वयं के सीखने का प्रभार लेने की क्षमता।"

होलेक ने इस बात पर जोर दिया कि स्वायत्त शिक्षार्थी सीखने के उद्देश्यों को निर्धारित करने, सीखने के तरीकों का चयन करने और उनकी प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए जिम्मेदार हैं।

डेविड लिटिल (1991) ने समझाया कि शिक्षार्थी स्वायत्तता में शिक्षार्थियों को प्रतिबिंब, आत्म-मूल्यांकन और स्वतंत्र निर्णय लेने के माध्यम से अपने सीखने पर नियंत्रण रखना शामिल है।

फिल बेन्सन (2011) ने शिक्षार्थी स्वायत्तता को छात्रों की सामग्री, गति और उनके सीखने की रणनीतियों को नियंत्रित करने की क्षमता के रूप में वर्णित किया, जो उन्हें अधिक स्वतंत्र और प्रभावी शिक्षार्थी बनने की अनुमति देता है।

आधुनिक शिक्षा में छात्र स्वायत्तता को आवश्यक माना जाता है क्योंकि यह महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान कौशल, प्रेरणा और आजीवन सीखने को बढ़ावा देता है, जिस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसी समकालीन शैक्षिक नीतियों में भी जोर दिया गया है।

आजीवन सीखने से तात्पर्य व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक विकास के लिए किसी व्यक्ति के जीवन भर ज्ञान, कौशल और दक्षताओं को प्राप्त करने की निरंतर प्रक्रिया से है। यह औपचारिक, गैर-औपचारिक और अनौपचारिक सीखने के अनुभवों के माध्यम से होता है।

पॉल लेनग्रेंड (1975) के अनुसार, आजीवन सीखना एक अवधारणा है जो जीवन भर निरंतर शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्तियों को सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों के अनुकूल होने की अनुमति मिलती है।

इसी तरह, पीटर जार्विस (2004) ने आजीवन सीखने को इस प्रकार परिभाषित किया:

"जीवन भर प्रक्रियाओं का संयोजन जिससे पूरा व्यक्ति सामाजिक स्थितियों का अनुभव करता है और उन्हें ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों में बदल देता है।"

रॉबर्ट जे. किड (1966) ने आजीवन सीखने को एक सतत प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जो औपचारिक स्कूली शिक्षा से परे है और व्यक्तियों को जीवन भर बौद्धिक और सामाजिक रूप से बढ़ने में मदद करता है।

यूनेस्को का कहना है कि आजीवन सीखने से व्यक्तियों को जीवन के सभी चरणों में अपनी क्षमताओं, ज्ञान और दक्षताओं को लगातार विकसित करने में सक्षम बनाता है।

आधुनिक शिक्षा में आजीवन सीखने को आवश्यक माना जाता है क्योंकि यह व्यक्तियों को अनुकूलनीय रहने, नए कौशल विकसित करने और बदलती सामाजिक और व्यावसायिक मांगों का प्रभावी ढंग से जवाब देने में मदद करता है।

शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा

शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा (LCE) एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें निर्देश का ध्यान शिक्षक से शिक्षार्थी की ओर स्थानांतरित हो जाता है। इस मॉडल में, छात्र सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं, अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लेते हैं, और महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान और निर्णय लेने में संलग्न होते हैं। शिक्षक एकमात्र ज्ञान प्रदाता के बजाय एक सूत्रधार के रूप में कार्य करता है।

कार्ल रोजर्स (1983) के अनुसार:

"एकमात्र शिक्षा जो व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, वह है शिक्षार्थी द्वारा स्व-खोजा, स्व-विनियोजित और स्व-मूल्यांकन। शिक्षा को शिक्षार्थी की जरूरतों, अनुभवों और क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।"

जॉन डेवी (1938) ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा बाल-केंद्रित और अनुभवात्मक होनी चाहिए, जिसमें छात्र सक्रिय रूप से अपने पर्यावरण के साथ बातचीत के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं।

लेव वायगोत्स्की (1978) ने कहा कि शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण सामाजिक संपर्क और मंचान के माध्यम से विकास का समर्थन करते हैं, जिससे शिक्षार्थियों को निर्देशित अन्वेषण के माध्यम से अपनी क्षमता तक पहुंचने की अनुमति मिलती है।

आधुनिक शिक्षा में, शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा स्वायत्तता, सहयोग और महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसी नीतियों के अनुरूप है, जो लचीलेपन, अनुभवात्मक शिक्षा और छात्र-केंद्रित शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा देती है।

एनईपी 2020 में स्व-निर्देशित अधिगम से संबंधित मुख्य अंतर्दृष्टि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति(एनईपी) 2020 पारंपरिक, शिक्षक-केंद्रित अधिगम से शिक्षार्थी-केंद्रित और लचीले शिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है। यद्यपि स्व-निर्देशित अधिगम शब्द का उपयोग हमेशा स्पष्ट रूप से नहीं किया जाता है, इसके सिद्धांत पूरी नीति में गहराई से अंतर्निहित है। एनईपी 2020 स्वायत्तता, लचीलेपन, अनुभवात्मक सीखने और आजीवन सीखने को दृढ़ता से बढ़ावा देती है, जो स्व-निर्देशित अधिगम के मुख्य तत्व है।

1. नींव के रूप में शिक्षार्थी-केंद्रित अधिगम:- एनईपी 2020 शिक्षार्थी को अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में रखता है। यह मानता है कि छात्र सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे सीखने के लक्ष्य निर्धारित करने और सीखने के रास्ते चुनने में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह अंतर्दृष्टि सीधे स्व-निर्देशित अधिगम के साथ संरेखित होती है, जहां शिक्षार्थी सूचना के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होने के बजाय अपने शैक्षिक निर्णयों की जिम्मेदारी लेते हैं।

2. आजीवन सीखने पर जोर:- एनईपी 2020 की सबसे महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि में से एक यह मान्यता है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है। नीति आजीवन विद्यार्थियों को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देती है जो स्वतंत्र रूप से अपने पूरे जीवन में नया ज्ञान और कौशल प्राप्त कर सकते हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्व-निर्देशित अधिगम आवश्यक है, क्योंकि यह अधिगमर्थियों को औपचारिक अधिगम से परे सीखने की क्षमता से लैस करती है।

3. पाठ्यक्रम में लचीलापन और विकल्प:- एनईपी 2020 बहु-विषयक अधिगम, कई प्रवेश-निकास विकल्पों और विकल्प-आधारित अधिगम के माध्यम से लचीलेपन का परिचय देती है। यह लचीलापन अधिगमर्थियों को व्यक्तिगत सीखने की यात्रा डिजाइन करने की अनुमति देता है, जो स्व-निर्देशित सीखने की एक प्रमुख विशेषता है। विद्यार्थियों को अपनी रुचि और प्रतिभा को अपनी गति से तलाशने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

4. रटना सीखने से योग्यता-आधारित अधिगम की ओर बदलाव:- नीति रटने की कड़ी आलोचना करती है और योग्यता-आधारित अधिगम पर जोर देती है। स्व-निर्देशित अधिगम अधिगमर्थियों को परीक्षाओं के लिए सामग्री को याद रखने के

बजाय समझ, अनुप्रयोग और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करके इस बदलाव का समर्थन करती है।

5. अनुभवात्मक और पूछताछ-आधारित अधिगम:- एनईपी 2020 में परियोजना-आधारित अधिगम, पूछताछ-आधारित अधिगम, इंटरशिप और सामुदायिक जुड़ाव जैसी अनुभवात्मक शिक्षण विधियों पर प्रकाश डाला गया है। इन दृष्टिकोणों के लिए अधिगमार्थियों को सक्रिय रूप से योजना बनाने, तलाशने और प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता होती है - स्व-निर्देशित सीखने की मुख्य प्रक्रियाएं।

6. आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल का विकास:- नीति उच्च-क्रम के सोच कौशल के विकास पर जोर देती है, जिसमें महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान शामिल है। स्व-निर्देशित अधिगम विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, जानकारी का मूल्यांकन करने और स्वतंत्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करके इन कौशलों को बढ़ावा देती है।

7. शिक्षकों की भूमिका परिवर्तन:- एनईपी 2020 सूचना प्रदाताओं से लेकर सुविधाकर्ताओं, सलाहकारों और मार्गदर्शकों तक शिक्षकों की भूमिका को फिर से परिभाषित करता है। यह परिवर्तन शिक्षकों को धीरे-धीरे अधिगमार्थियों को जिम्मेदारी हस्तांतरित करते हुए सीखने को मंचान बनाने की अनुमति देकर स्व-निर्देशित सीखने का समर्थन करता है।

8. स्वतंत्र अधिगम के लिए प्रौद्योगिकी का एकीकरण:- नीति डिजिटल प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और खुले शैक्षिक संसाधनों के उपयोग का पुरजोर समर्थन करती है। ये उपकरण अधिगमार्थियों को स्वतंत्र रूप से ज्ञान तक पहुंचने के लिए सशक्त बनाते हैं, कक्षा की सीमाओं से परे स्व-गति और स्व-निर्देशित सीखने का समर्थन करते हैं।

9. सतत और रचनात्मक मूल्यांकन:- एनईपी 2020 उच्च-दांव परीक्षाओं के बजाय रचनात्मक और योग्यता-आधारित मूल्यांकन की वकालत करती है। स्व-मूल्यांकन, सहकर्मी मूल्यांकन और चिंतनशील मूल्यांकन अधिगमार्थियों को अपनी प्रगति की निगरानी करने में सक्षम बनाकर स्व-निर्देशित सीखने के साथ संरेखित करते हैं।

10. सीखने के अवसरों में समावेशिता और समानता:- एनईपी 2020 का उद्देश्य समावेशी और न्यायसंगत अधिगम का निर्माण करना है। स्व-निर्देशित अधिगम लचीले शिक्षण मार्ग प्रदान करता है जो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, सीखने की क्षमताओं और आयु समूहों सहित विविध विद्यार्थियों को समायोजित करता है।

निष्कर्ष: स्व-निर्देशित शिक्षा (SDL) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक रणनीति के रूप में उभरती है, जो शिक्षार्थी-केंद्रित, लचीली और कौशल-आधारित शिक्षा पर जोर देती है। यह नीति रटने से दूर जाने का

प्रयास करती है और अनुभवात्मक, पूछताछ-आधारित और प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिससे एसडीएल शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। शिक्षार्थियों को सीखने के लक्ष्य निर्धारित करने, संसाधनों का चयन करने, उनकी प्रगति की निगरानी करने और परिणामों का मूल्यांकन करने में पहल करने के लिए प्रोत्साहित करके, एसडीएल छात्रों की स्वायत्तता, महत्वपूर्ण सोच और समस्या को सुलझाने के कौशल को विकसित करता है- ऐसे गुण जिन्हें एनईपी 2020 इक्कीसवीं सदी के शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक के रूप में पहचानता है। एनईपी 2020 की मुख्य अंतर्दृष्टि यह है कि अधिगम को विद्यार्थियों को अपने स्वयं के सीखने के लिए स्वतंत्र, प्रेरित और जिम्मेदार बनने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। स्व-निर्देशित अधिगम एक वैकल्पिक रणनीति नहीं है, बल्कि पाठ्यक्रम डिजाइन, अधिगमशास्त्र, मूल्यांकन और शिक्षक भूमिकाओं में अंतर्निहित एक मूलभूत सिद्धांत है। स्वायत्तता, लचीलेपन और आजीवन सीखने के कौशल को बढ़ावा देकर, एनईपी 2020 भारत की अधिगम प्रणाली में स्व-निर्देशित अधिगम के सफल कार्यान्वयन के लिए एक मजबूत नींव रखता है।

एसडीएल न केवल अकादमिक प्रदर्शन को बढ़ाता है बल्कि छात्रों के बीच आत्म-प्रेरणा, रचनात्मकता और आजीवन सीखने की क्षमताओं को भी बढ़ावा देता है। जब छात्रों को अपने सीखने की जिम्मेदारी लेने के लिए सशक्त बनाया जाता है, तो वे आत्मविश्वास, अनुकूलनशीलता और लचीलापन विकसित करते हैं, जो तेजी से बदलते सामाजिक और तकनीकी परिदृश्य को नेविगेट करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, डिजिटल उपकरणों, लचीले पाठ्यक्रम और बहु-विषयक सीखने के अवसरों का एकीकरण - जैसा कि एनईपी 2020 में अनुशासित है - स्व-निर्देशित दृष्टिकोणों का समर्थन करता है, जिससे छात्रों को अपनी गति से और उनकी रुचियों के अनुसार सीखने में सक्षम बनाया जाता है।

सीमित जागरूकता, अपर्याप्त शिक्षक प्रशिक्षण और पारंपरिक तरीकों पर निर्भरता जैसी चुनौतियों के बावजूद, स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में एसडीएल रणनीतियों के कार्यान्वयन से छात्र जुड़ाव, संतुष्टि और समग्र सीखने के परिणामों में काफी सुधार हो सकता है। अंत में, स्व-निर्देशित शिक्षा केवल एक शैक्षणिक पद्धति नहीं है, बल्कि एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है जो एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो छात्रों को अकादमिक और व्यावसायिक सफलता दोनों के लिए तैयार स्वायत्त, जिम्मेदार और आजीवन शिक्षार्थी बनने के लिए सशक्त बनाता है।

संदर्भ:

बेन्सन, पी. (2011). *भाषा सीखने में स्वायत्तता का शिक्षण और शोध*. रूटलेज.

ब्रुकफील्ड, एसडी (1986). *वयस्क सीखने को समझना और सुविधाजनक बनाना*. जोसी-बास.

- ब्राउन, जी., & रेस, पी. (2012). छात्र सीखने को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी मूल्यांकन का उपयोग करना. रूटलेज.
- केंडी, पीसी (1991). आजीवन सीखने के लिए स्व-दिशा. जोसी-बास.
- डैम, एल. (1995). व्यवहार में शिक्षार्थी स्वायत्तता. ऑर्थेंटिक.
- डिकिंसन, एल. (1987). भाषा सीखने में स्व-निर्देश. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- डेवी, जे. (1938). अनुभव और शिक्षा. मैकमिलन.
- फील्ड, जे. (2006). आजीवन सीखना और नई शैक्षिक व्यवस्था. ट्रेटम बुक्स.
- गैरीसन, डीआर (1997). स्व-निर्देशित शिक्षा: एक व्यापक मॉडल की ओर. प्रौढ़ शिक्षा त्रैमासिक, 48(1), 18-33.
<https://doi.org/10.1177/074171369704800103>
- होलेक, एच. (1981). स्वायत्तता और विदेशी भाषा सीखना. पेर्गमोन प्रेस.
- जार्जिस, पी. (2004). वयस्क शिक्षा और आजीवन सीखना: सिद्धांत और व्यवहार. रूटलेज.
- किड, जे. आर. (1966). निरंतर सीखने के निहितार्थ. ओआईएसई प्रेस.
- नोल्स, एमएस (1975). स्व-निर्देशित शिक्षा: शिक्षार्थियों और शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शिका. फोलेट प्रकाशन.
- लेनग्रेण्ड, पी. (1975). आजीवन शिक्षा का परिचय. यूनेस्को.
- लिटिल, डी. (1991). शिक्षार्थी स्वायत्तता: परिभाषाएँ, मुद्दे और समस्याएँ. ऑर्थेंटिक.
- मरियम, एस. बी., & बिरेमा, एल. एल. (2014). वयस्क शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार को जोड़ना. जोसी-बास.
- शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.
- रोजर्स, सी. (1983). 80 के दशक के लिए सीखने की स्वतंत्रता. चार्ल्स ई. मेरिल.
- यूनेस्को (2015). शिक्षा पर पुनर्विचार: एक वैश्विक आम भलाई की ओर? यूनेस्को प्रकाशन.
- वायगोत्स्की, एल. एस. (1978). समाज में मन: उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- वीमर, एम. (2002). शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण: अभ्यास में पांच प्रमुख परिवर्तन. जोसी-बास.